

“मीठे बच्चे – देही-अभिमानी बन बाप को याद करो तो याद का बल जमा होगा, याद के बल से तुम सारे विश्व का राज्य ले सकते हो”

**प्रश्न:-** कौन-सी बात तुम बच्चों के ख्याल-ख्वाब में भी नहीं थी, जो प्रैक्टिकल हुई है?

**उत्तर:-** तुम्हारे ख्याल ख्वाब में भी नहीं था कि हम भगवान से राजयोग सीखकर विश्व के मालिक बनेंगे। राजाई के लिए पढ़ाई पढ़ेंगे। अभी तुम्हें अथाह खुशी है कि सर्वशक्तिमान बाप से बल लेकर हम सतयुगी स्वराज्य अधिकारी बनते हैं।

**ओम् शान्ति।** यहाँ बच्चियाँ बैठती हैं प्रैक्टिस के लिए। वास्तव में यहाँ (संदली पर) बैठना उनको चाहिए जो देही-अभिमानी बन बाप की याद में बैठे। अगर याद में नहीं बैठेंगी तो वह टीचर कहला नहीं सकती। याद में शक्ति रहती है, ज्ञान में शक्ति नहीं है। इसको कहा ही जाता है – याद का बल। योगबल संन्यासियों का अक्षर है। बाप डिफीकल्ट अक्षर काम में नहीं लाते। बाप कहते हैं बच्चों अब बाप को याद करो। जैसे छोटे बच्चे माँ-बाप को याद करते हैं ना। वह तो देहधारी हैं। तुम बच्चे हो विचित्र। यह चित्र यहाँ तुमको मिलता है। तुम रहने वाले विचित्र देश के हो। वहाँ चित्र रहता नहीं। पहले-पहले यह पक्का करना है—हम तो आत्मा हैं इसलिए बाप कहते हैं—बच्चे, देही-अभिमानी बनो, अपने को आत्मा निश्चय करो। तुम निर्वाण देश से आये हो। वह तुम सभी आत्माओं का घर है। यहाँ पार्ट बजाने आते हो। पहले-पहले कौन आते हैं? यह भी तुम्हारी बुद्धि में है। दुनिया में कोई नहीं जिसको यह ज्ञान हो। अब बाप कहते हैं शास्त्र आदि जो कुछ पढ़ते हो उन सबको भूल जाओ। श्री कृष्ण की महिमा, फलाने की महिमा कितनी करते हैं। गांधी की भी कितनी महिमा करते हैं। जैसेकि वह रामराज्य स्थापन करके गये हैं। परन्तु शिव भगवानुवाच आदि सनातन राजा-रानी के राज्य का जो कायदा था, बाप ने राजयोग सिखाकर राजा-रानी बनाया, उस ईश्वरीय रस्म-रिवाज को भी तोड़ डाला। बोला राजाई नहीं चाहिए, हमको प्रजा का प्रजा पर राज्य चाहिए। अब उसकी क्या हालत हुई! दुःख ही दुःख, लड़ते-झगड़ते रहते हैं। अनेक मतें हो गई हैं। अभी तुम बच्चे श्रीमत पर राज्य लेते हो। इतनी तुम्हारे में ताकत रहती है जो वहाँ लश्कर आदि होता नहीं। डर की कोई बात नहीं। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, अद्वैत राज्य था। दो थे ही नहीं जो ताली बजे। उसको कहा ही जाता है – अद्वैत राज्य। तुम बच्चों को बाप देवता बनाते हैं। फिर द्वैत से दैत्य बन जाते हैं रावण द्वारा। अभी तुम बच्चे जानते हो हम भारतवासी सारे विश्व के मालिक थे। तुमको विश्व का राज्य सिर्फ याद बल से मिला था। अब फिर मिल रहा है। कल्प-कल्प मिलता है, सिर्फ याद के बल से। पढ़ाई में भी बल है। जैसे बैरिस्टर बनते हैं तो बल है ना। वह है पाई-पैसे का बल। तुम योगबल से विश्व पर राज्य करते हो। सर्वशक्तिमान बाप से बल मिलता है। तुम कहते हो—बाबा, हम कल्प-कल्प आपसे सतयुग का स्वराज्य लेते हैं फिर गँवाते हैं, फिर लेते हैं। तुमको पूरा ज्ञान मिला है। अभी हम श्रीमत पर श्रेष्ठ विश्व का राज्य लेते हैं। विश्व भी श्रेष्ठ बन जाता है। यह रचता और रचना का ज्ञान तुमको अभी है। इन लक्ष्मी-नारायण को भी ज्ञान नहीं होगा कि हमने राजाई कैसे ली! यहाँ तुम पढ़ते हो फिर जाकर राजाई करते हो। कोई अच्छे धनवान के घर में जन्म लेते हैं तो कहा जाता है ना इसने आगे जन्म में अच्छा कर्म किया है, दान-पुण्य किया है। जैसा कर्म ऐसा जन्म मिलता है। अभी तो यह है ही रावण राज्य। यहाँ जो भी कर्म करते हैं वह विकर्म होता है। सीढ़ी उतरनी ही है। सबसे बड़े ऊँच से ऊँच देवी-देवता धर्म वालों को भी सीढ़ी उतरनी है। सतो, रजो, तमो में आना है। हर एक चीज़ नई से फिर पुरानी होती है। तो अभी तुम बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। तुम्हारे ख्याल-ख्वाब (संकल्प-स्वप्न) में भी नहीं था कि हम विश्व के मालिक बनते हैं।

भारतवासी जानते हैं कि इन लक्ष्मी-नारायण का सारे विश्व पर राज्य था। पूज्य थे सो फिर पुजारी बने हैं। गाया भी जाता है आपेही पूज्य, आपेही पुजारी। अब तुम्हारी बुद्धि में यह होना चाहिए। यह नाटक तो बड़ा वन्दरफुल है। कैसे हम 84 जन्म लेते हैं, उनको कोई नहीं जानते। शास्त्रों में 84 लाख जन्म लगा देते हैं। बाप कहते हैं यह सब भक्ति मार्ग के गपोड़े हैं। रावण राज्य है ना। राम राज्य और रावण राज्य कैसे होता है, यह तुम बच्चों के सिवाए और कोई की बुद्धि में नहीं है। रावण को हर वर्ष जलाते हैं, तो दुश्मन है ना। 5 विकार मनुष्य के दुश्मन हैं। रावण है कौन, क्यों जलाते हैं – कोई भी नहीं जानते। जो अपने को संगमयुगी समझते हैं उनकी स्मृति में रहता है कि अभी हम पुरुषोत्तम बन रहे हैं। भगवान हमको

राजयोग सिखलाकर नर से नारायण, भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमको ऊंच ते ऊंच निराकार भगवान पढ़ाते हैं। कितनी अथाह खुशी होनी चाहिए। स्कूल में स्टूडेंट की बुद्धि में रहता है ना – हम स्टूडेंट हैं। वह तो है कॉमन टीचर, पढ़ाने वाला। यहाँ तो तुमको भगवान पढ़ाते हैं। जब पढ़ाई से इतना ऊंच पद मिलता है तो कितना अच्छा पढ़ना चाहिए। है बहुत इजी सिर्फ सवेरे आधा-पौना घण्टा पढ़ना है। सारा दिन धन्धे आदि में याद भूल जाती है इसलिए यहाँ सवेरे आकर याद में बैठते हैं। कहा जाता है बाबा को बहुत प्रेम से याद करो—बाबा, आप हमको पढ़ाने आये हैं, अभी हमको पता पड़ा है कि आप 5 हजार वर्ष बाद आकर पढ़ाते हैं। बाबा के पास बच्चे आते हैं तो बाबा पूछते हैं आगे कब मिले हो? ऐसा प्रश्न कोई भी साधू-संन्यासी आदि कभी पूछ न सके। वहाँ तो सतसंग में जो चाहे जाकर बैठते हैं। बहुतों को देखकर सब अन्दर घुस जाते हैं। तुम भी अभी समझते हो – हम गीता, रामायण आदि कितना खुशी से जाकर सुनते थे। समझते तो कुछ नहीं थे। वह सब भक्ति की ही खुशी है। बहुत खुशी में नाचते रहते हैं। परन्तु फिर नीचे उतरते आते हैं। किस्म-किस्म के हठयोग आदि करते हैं। तन्दुरुस्ती के लिए ही सब करते हैं। तो बाप समझाते हैं यह सब है भक्ति मार्ग की रस्म-रिवाज। रचता और रचना को कोई भी नहीं जानते। तो बाकी रहा ही क्या। रचता रचना को जानने से तुम क्या बनते हो और न जानने से तुम क्या बन पड़ते हो? तुम जानने से सालवेन्ट बनते हो, न जानने से वही भारतवासी इनसालवेन्ट बन पड़े हैं। गपोड़े मारते रहते हैं। क्या-क्या दुनिया में होता रहता है। कितने पैसे, सोना आदि लूटते हैं! अब तुम बच्चे जानते हो – वहाँ तो हम सोने के महल बनायेंगे। बैरिस्टरी आदि पढ़ते हैं तो अन्दर में रहता है ना – हम यह इम्तहान पास कर फिर यह करेंगे, घर बनायेंगे। तुमको क्यों नहीं बुद्धि में आता है हम स्वर्ग का प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने के लिए पढ़ रहे हैं। खुशी कितनी रहनी चाहिए। परन्तु बाहर जाने से ही खुशी गुम हो जाती है। छोटी-छोटी बच्चियाँ इस ज्ञान में लग जाती हैं। सम्बन्धी कुछ भी समझते नहीं, कह देते जादू है। कहते हैं हम पढ़ने नहीं देंगे। इस हालत में जब तक सगीर हैं तो माँ-बाप का कहना मानना पड़े। हम ले नहीं सकते। बहुत खिंटपिट हो पड़ती है। शुरू में कितनी खिंटपिट हुई। बच्ची कहे हम 18 वर्ष की हैं, बाप कहे नहीं, 16 वर्ष की है, सगीर है, झगड़ा कर पकड़ ले जाते थे। सगीर माना ही बाप के हुक्म में चलना है। बालिग है फिर जो चाहे सो करे। कायदे भी हैं ना। बाबा कहते तुम जब बाप के पास आते हो तो कायदा है अपने लौकिक बाप का सर्टीफिकेट (चिट्ठी) लेकर आओ। फिर मैन्स भी देखने होते हैं। मैन्स ठीक नहीं हैं तो वापिस जाना पड़ेगा। खेल में भी ऐसे होता है। ठीक नहीं खेलते तो उनको कहेंगे बाहर जाओ। आबरू (इज्जत) गँवाते हो। अभी तुम बच्चे जानते हो हम युद्ध के मैदान में हैं। कल्प-कल्प बाप आकर हमको माया पर जीत पहनाते हैं। मूल बात ही है पावन बनने की। पतित बने हैं विकार से। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। यह आदि-मध्य-अन्त दुःख देने वाला है। जो ब्राह्मण बनेंगे वही फिर देवी-देवता धर्म में आयेगे। ब्राह्मणों में भी नम्बरवार होते हैं। शमा पर परवाने आते हैं। कोई तो जल मरते हैं, कोई फेरी पहनकर चले जाते हैं। यहाँ भी आये हैं, कोई तो एकदम फ़िदा होते हैं, कोई सुनकर फिर चले जाते हैं। आगे तो ब्लड से भी लिखकर देते थे – बाबा, हम आपके हैं। फिर भी माया हरा लेती है। इतनी माया की युद्ध चलती है, इनको ही युद्ध स्थल कहा जाता है। यह भी तुम समझते हो। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों-शास्त्रों का सार समझाते हैं। चित्र तो ढेर बना दिये हैं ना। नारद का भी मिसाल इस समय का है। सब कहते हैं – हम लक्ष्मी अथवा नारायण बनेंगे। बाप कहते हैं अपने अन्दर में देखो – हम लायक हैं? हमारे में कोई विकार तो नहीं है? नारद भक्त तो सब हैं ना। यह एक मिसाल लिखा है।

भक्ति मार्ग वाले कहते हैं हम श्री लक्ष्मी को वर सकते हैं? बाप कहते हैं कि नहीं, जब ज्ञान सुनें तब सद्गति को पा सकें। मैं पतित-पावन ही सबकी सद्गति करने वाला हूँ। अभी तुम समझते हो बाप हमको रावण राज्य से लिबरेट कर रहे हैं। वह है जिस्मानी यात्रा। भगवानुवाच – मनमनाभव। बस, इसमें धक्के खाने की बात नहीं। वह सब है भक्ति मार्ग के धक्के। आधाकल्प ब्रह्मा का दिन, आधाकल्प है ब्रह्मा की रात। तुम समझते हो हम सब बी.के. का अभी आधाकल्प दिन होगा। हम सुखधाम में होंगे। वहाँ भक्ति नहीं होगी। अभी तुम बच्चे जानते हो हम सबसे साहूकार बनते हैं, तो कितनी खुशी होनी चाहिए। तुम सब पहले रफ पत्थर थे, अब बाप सीरान (धार) पर चढ़ा रहे हैं। बाबा जौहरी भी है ना। ड्रामा अनुसार बाबा ने रथ भी अनुभवी लिया है। गायन भी है गांव का छोरा। श्री कृष्ण गांव का छोरा कैसे हो सकता है। वह तो

सतयुग में था। उनको तो झूलों में झुलाते हैं। ताज पहनाते हैं फिर गांव का छोरा क्यों कहते? गांव के छोरे श्याम ठहरे। अभी सुन्दर बनने आये हो। बाप ज्ञान की सीरान पर चढ़ाते हैं ना। यह सत का संग कल्प-कल्प, कल्प में एक ही बार मिलता है। बाकी सब हैं झूठ संग इसलिए बाप कहते हैं हियर नो ईविल.... ऐसी बातें मत सुनो जहाँ हमारी और तुम्हारी ग्लानि करते रहते हैं।

जो कुमारियाँ ज्ञान में आती हैं वह तो कह सकती हैं कि हमारा बाप की प्रापर्टी में हिस्सा है। क्यों न हम उनसे भारत की सेवा अर्थ सेन्टर खोलूँ। कन्या दान तो देना ही है। वह हिस्सा हमको दो तो हम सेन्टर खोलें। बहुतों का कल्याण होगा। ऐसी युक्ति रचनी चाहिए। यह है तुम्हारी ईश्वरीय मिशन। तुम पत्थरबुद्धि को पारसबुद्धि बनाते हो। जो हमारे धर्म के होंगे वह आयेंगे। एक ही घर में देवी-देवता धर्म का फूल निकल आयेगा। बाकी नहीं आयेंगे। मेहनत लगती है ना। बाप सभी आत्माओं को पावन बनाकर सबको ले जाते हैं इसलिए बाबा ने समझाया था – संगम के चित्र पर ले जाओ। इस तरफ है कलियुग, उस तरफ है सतयुग। सतयुग में हैं देवतायें, कलियुग में हैं असुर। इसको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगमयुग। बाप ही पुरुषोत्तम बनाते हैं। जो पढ़ेंगे वह सतयुग में आयेंगे, बाकी सब मुक्तिधाम में चले जायेंगे। फिर अपने-अपने समय पर आयेंगे। यह गोले का चित्र बड़ा अच्छा है। बच्चों को सर्विस का शौक होना चाहिए। हम ऐसी-ऐसी सर्विस कर, गरीबों का उद्धार कर उनको स्वर्ग का मालिक बनायेंगे। अच्छा।

मीठी-मीठे सिकीलथे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) अपने आपको देखना है हम श्री लक्ष्मी, श्री नारायण समान बन सकते हैं? हमारे में कोई विकार तो नहीं है? फेरी लगाने वाले परवाने हैं या फ़िदा होने वाले? ऐसे मैनेर्स तो नहीं हैं जो बाप की आबरू (इज्जत) जाये।
- 2) अथाह खुशी में रहने के लिए – सवेरे-सवेरे प्रेम से बाप को याद करना है और पढ़ाई पढ़नी है। भगवान हमें पढ़ाकर पुरुषोत्तम बना रहे हैं, हम संगमयुगी हैं, इस नशे में रहना है।

**वरदान:- सर्व गुणों के अनुभवों द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने वाले अनुभवी मूर्त भव**

जो बाप के गुण गाते हो उन सर्व गुणों के अनुभवी बनो, जैसे बाप आनंद का सागर है तो उसी आनंद के सागर की लहरों में लहराते रहो। जो भी सम्पर्क में आये उसे आनंद, प्रेम, सुख... सब गुणों की अनुभूति कराओ। ऐसे सर्व गुणों के अनुभवी मूर्त बनो तो आप द्वारा बाप की सूरत प्रत्यक्ष हो क्योंकि आप महान आत्मायें ही परम आत्मा को अपनी अनुभवी मूर्त से प्रत्यक्ष कर सकती हो।

**स्लोगन:-** कारण को निवारण में परिवर्तन कर अशुभ बात को भी शुभ करके उठाओ।

**अव्यक्त इशारे - रूहानी रॉयल्टी और प्युरिटी की पर्सनैलिटी धारण करो**

ब्राह्मणों की लाइफ, जीवन का जीय-दान पवित्रता है। आदि-अनादि स्वरूप ही पवित्रता है। जब स्मृति आ गई कि मैं अनादि-आदि पवित्र आत्मा हूँ। स्मृति आना अर्थात् पवित्रता की समर्थी आना। स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप आत्मायें निज़ी पवित्र संस्कार वाली हैं। तो निज़ी संस्कारों को इमर्ज कर इस पवित्रता की पर्सनैलिटी को धारण करो।

19-05-2025 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

**“मीठे बच्चे - श्रीमत ही तुमको श्रेष्ठ बनाने वाली है, इसलिए श्रीमत को भूलो मत, अपनी मत को छोड़ एक बाप की मत पर चलो”**

**प्रश्न:-** पुण्य आत्मा बनने की युक्ति क्या है?

**उत्तर:-** पुण्य आत्मा बनना है तो सच्ची दिल से, प्यार से एक बाप को याद करो। 2. कर्मेन्द्रियों से कोई भी विकर्म न करो। सबको रास्ता बताओ। अपनी दिल से पूछो - यह पुण्य हम कितना करते हैं? अपनी चेकिंग करो - ऐसा कोई कर्म न हो जिसकी 100 गुणा सजा खानी पड़े। तो चेकिंग करने से पुण्य आत्मा बन जायेंगे।

**ओम् शान्ति।** रूहानी बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, यह तो बच्चों को मालूम है कि अभी हम शिवबाबा की मत पर चल रहे हैं। उनकी है ऊंच ते ऊंच मत। दुनिया यह नहीं जानती कि ऊंच ते ऊंच शिवबाबा कैसे बच्चों को श्रेष्ठ बनाने के लिए श्रेष्ठ मत देते हैं। इस रावण राज्य में कोई भी मनुष्य मात्र, मनुष्य को श्रेष्ठ मत दे नहीं सकते। तुम अभी ईश्वरीय मत वाले बनते हो। इस समय तुम बच्चों को पतित से पावन बनने के लिए ईश्वरीय मत मिल रही है। अभी तुमको पता पड़ा है हम तो विश्व के मालिक थे। यह (ब्रह्मा) जो मालिक था उनको भी पता नहीं था। विश्व के मालिक फिर एकदम पतित बन जाते हैं। यह खेल बहुत अच्छी रीति बुद्धि से समझने का है। राइट-रांग क्या है, इसमें है बुद्धि की लड़ाई। सारी दुनिया है रांग। एक बाप ही है राइट, सच बोलने वाला। वह तुमको सचखण्ड का मालिक बनाते हैं तो उनकी मत लेनी चाहिए। अपनी मत पर चलने से धोखा खायेंगे। परन्तु वह है गुप्त। है भी निराकार। बहुत बच्चे गफलत करते हैं, समझते हैं - यह तो दादा की मत है। माया श्रेष्ठ मत लेने नहीं देती है। श्रीमत पर चलना चाहिए ना। बाबा आप जो कहेंगे वह हम मानेंगे जरूर। परन्तु कई मानते नहीं हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मत पर चलते हैं बाकी तो अपनी मत चला लेते हैं। बाबा आये हैं श्रेष्ठ मत देने। ऐसे बाप को घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। माया मत लेने नहीं देती। श्रीमत तो बहुत सहज है ना। दुनिया में कोई को यह समझ नहीं कि हम तमोप्रधान हैं। मेरी मत तो मशहूर है, श्रीमत भगवत गीता। भगवान अभी कहते हैं मैं 5 हजार वर्ष बाद आता हूँ, आकर भारत को श्रीमत दे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनाता हूँ। बाप तो सावधान करते हैं, बच्चे श्रीमत पर नहीं चलते। बाप रोज़-रोज़ समझाते रहते हैं - बच्चों, श्रीमत पर चलना भूलो मत। इन (ब्रह्मा) की तो बात ही नहीं। उनकी बात समझो। वही इन द्वारा मत देते हैं। वही समझाते हैं। खान-पान खाते नहीं, कहते हैं मैं अभोक्ता हूँ। तुम बच्चों को श्रीमत देता हूँ। नम्बरवन मत देते हैं मुझे याद करो। कोई भी विकर्म नहीं करो। अपने दिल से पूछो कितना पाप किया है? यह तो जानते हो सबका पापों का घड़ा भरा हुआ है। इस समय सभी रांग रास्ते पर हैं। तुम्हें अभी बाप द्वारा राइट रास्ता मिला है। तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। गीता में जो ज्ञान होना चाहिए वह है नहीं। वह कोई बाप की बनाई हुई नहीं है। यह भी भक्ति मार्ग में नूँध है। कहते भी हैं भगवान आकर भक्ति का फल देंगे। बच्चों को समझाया है - ज्ञान से सद्गति। सद्गति भी सबकी होती है, दुर्गति भी सबकी होती है। यह तो दुनिया ही

तमोप्रधान है। सतोप्रधान कोई है नहीं। पुनर्जन्म लेते-लेते अब पिछाड़ी आकर हुई है। अब मौत सबके सिर पर खड़ा है। भारत की ही बात है। गीता भी है देवी-देवता धर्म का शास्त्र। तो तुम्हें दूसरे कोई धर्म में जाने से क्या फ़ायदा। हर एक अपनी-अपनी कुरान, बाइबिल आदि ही पढ़ते हैं। अपने धर्म को जानते हैं। एक भारतवासी ही अन्य सब धर्मों में चले जाते हैं। और सब अपने-अपने धर्म में पक्के हैं। हर एक धर्म वाले की शकल आदि अलग है। बाप स्मृति दिलाते हैं - बच्चे, तुम अपने देवी-देवता धर्म को भूल गये हो। तुम स्वर्ग के देवता थे, हम सो का अर्थ भारतवासियों को बाप ने सुनाया है। बाकी हम आत्मा सो परमात्मा नहीं हैं। यह बात तो भक्ति मार्ग के गुरु लोगों ने बनाई हैं। गुरु भी करोड़ों होंगे। स्त्री को पति के लिए कहते हैं कि यह तुम्हारा गुरु ईश्वर है। जबकि पति ही ईश्वर है फिर हे भगवान, हे राम क्यों कहती हो। मनुष्यों की बुद्धि बिल्कुल ही पत्थर बन गई है। यह खुद भी कहते हम भी ऐसे थे। कहाँ बैकुण्ठ का मालिक श्री कृष्ण, कहाँ फिर उनको गांव का छोरा कह दिया है। श्याम-सुन्दर कहते हैं। अर्थ थोड़ेही समझते। अभी बाप ने तुमको समझाया है जो नम्बरवन सुन्दर वही नम्बर लास्ट तमोप्रधान श्याम बना है। तुम समझते हो हम सुन्दर थे फिर श्याम बने हैं, 84 क चक्र लगाए अभी श्याम से सुन्दर बनने के लिए बाप एक ही दवाई देते हैं कि मुझे याद करो। तुम्हारी आत्मा पतित से पावन बन जायेगी। तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप नाश हो जायेंगे।

तुम जानते हो जब से रावण आया है तुम गिरते-गिरते पाप आत्मा बने हो। यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया। एक भी सुन्दर नहीं। बाप बिगर सुन्दर कोई बना न सके। तुम आये हो स्वर्गवासी सुन्दर बनने। अभी नर्कवासी श्याम हैं क्योंकि काम चिंता पर चढ़ काले बने हैं। **बाप कहते हैं** काम महाशत्रु है। इन पर जो जीत पायेंगे वही जगत जीत बनेंगे। नम्बरवन है काम। उनको ही पतित कहा जाता है। क्रोधी को पतित नहीं कहेंगे। बुलाते भी हैं कि आकर पतित से पावन बनाओ। तो अब बाप आये हैं कहते हैं यह अन्तिम जन्म पावन बनो। जैसे रात के बाद दिन, दिन के बाद रात होती है, वैसे संगमयुग के बाद फिर सतयुग आना है। चक्र फिरना है। बाकी और कोई आकाश में अथवा पाताल में दुनिया नहीं है। सृष्टि तो यही है। सतयुग, त्रेता.... यहाँ ही है। झाड़ भी एक ही है, और कोई हो नहीं सकता। यह सब गपोड़े हैं जो कहते हैं अनेक दुनियायें हैं। **बाप कहते हैं** यह सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। अब बाप सत्य बात सुनाते हैं। अब अपने अन्दर देखो - हम कहाँ तक श्रीमत पर चल सतोप्रधान अर्थात् पुण्य आत्मा बन रहे हैं? सतोप्रधान को पुण्य आत्मा, तमोप्रधान को पाप आत्मा कहा जाता है। विकार में जाना पाप है। **बाप कहते हैं** अब पवित्र बनो। मेरे बने हो तो मेरी श्रीमत पर चलना है। मुख्य बात है कोई पाप नहीं करो। नम्बरवन पाप है विकार में जाना। फिर और भी पाप बहुत होते हैं। चोरी चकारी, ठगी आदि बहुत करते हैं। फिर बहुतों को गवर्मेन्ट पकड़ती भी है। अब बाप बच्चों को कहते हैं तुम अपने दिल से पूछो - हम कोई पाप तो नहीं करते हैं? ऐसे मत समझो - हमने चोरी की वा रिश्त खार्ड तो यह बाबा तो जानी-जाननहार है, सब जानते हैं। नहीं, जानी-जाननहार का अर्थ कोई यह नहीं है। अच्छा, कोई ने चोरी की, बाप जानेंगे फिर क्या? जो चोरी की उसका दण्ड सौ गुणा हो ही जायेगा। बहुत-बहुत सज़ा खायेंगे। पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। बाप समझाते हैं ऐसे अगर काम करेंगे तो दण्ड भोगना पड़ेगा। कोई ईश्वर का बच्चा बनकर

फिर चोरी करता, शिवबाबा जिससे इतना वर्सा मिलता है, उनके भण्डारे से चोरी करता, यह तो बहुत बड़ा पाप है। कोई-कोई में चोरी की आदत होती है, उनको जेल बर्ड कहा जाता है। यह है ईश्वर का घर। सब कुछ ईश्वर का है ना। ईश्वर के घर में आते हैं बाप से वर्सा लेने। परन्तु कोई-कोई की आदत हो जाती है, उसकी सजा सौगुणा बन जाती है। सज़ायें भी बहुत मिलेंगी और फिर जन्म बाई जन्म डर्टी घर में जाए जन्म लेंगे, तो अपना ही नुकसान किया ना। ऐसे बहुत हैं जो याद में बिल्कुल नहीं रहते, सुनते कुछ नहीं। बुद्धि में चोरी आदि के ही ख्यालात चलते रहते हैं। ऐसे बहुत सतसंग में जाते हैं। चप्पल चोरी कर लेते, उनका धन्धा ही यह रहता है। जहाँ सतसंग होता वहाँ जाकर चप्पल चोरी कर आयेंगे। दुनिया बिल्कुल ही डर्टी है। यह है ईश्वर का घर। चोरी की आदत तो बहुत खराब है। कहा जाता है - कख का चोर सो लख का चोर। अपने अन्दर से पूछना चाहिए - हम कितना पुण्य आत्मा बने हैं? कितना बाप को याद करते हैं? कितना हम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं? कितना समय ईश्वरीय सर्विस में रहते हैं? कितने पाप कटते जा रहे हैं? अपना पोता-मेल रोज़ देखो। कितना पुण्य किया, कितना योग में रहा? कितने को रास्ता बताया? धंधा आदि तो भल करो। तुम कर्मयोगी हो। कर्म तो भल करो। बाबा यह बैजेज़ बनाते रहते हैं। अच्छे-अच्छे लोगों को इस पर समझाओ। इस महाभारत लड़ाई द्वारा ही स्वर्ग के गेट्स खुल रहे हैं। श्री कृष्ण के चित्र में नीचे लिखत बड़ी फर्स्टक्लास है। परन्तु बच्चे अभी इतना विशाल बुद्धि नहीं हुए हैं। थोड़ा ही धन मिलता है तो नाचने लग पड़ते हैं। कोई को जास्ती धन होता है तो समझते हैं हमारे जैसा कोई नहीं होगा। जिन बच्चों को बाप की परवाह नहीं, उन्हें बाप जो इतना अविनाशी ज्ञान रत्नों का खज़ाना देते हैं उसकी भी कदर नहीं रहती है। बाबा एक बात कहेगा, वह दूसरी बात कर लेते। परवाह न होने के कारण बहुत पाप करते रहते हैं। श्रीमत पर चलते नहीं। फिर गिर पड़ते हैं। बाप कहेंगे यह भी ड्रामा। उनकी तकदीर में नहीं है। बाबा तो जानते हैं ना। बहुत पाप करते हैं, अगर निश्चय हो कि बाप हमको पढ़ाते हैं तो खुशी रहनी चाहिए। तुम जानते हो हम भविष्य नई दुनिया में प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे, तो कितनी खुशी रहनी चाहिए। परन्तु बच्चे तो अभी तक भी मुरझाते रहते हैं। वह अवस्था ठहरती नहीं है।

बाबा ने समझाया है - विनाश के लिए रिहर्सल भी होगी। कैलेमिटीज़ भी होंगी। भारत को कमज़ोर करते जायेंगे। बाप खुद कहते हैं - यह सब होना ही है। नहीं तो विनाश कैसे होगा। बर्फ़ की बरसात पड़ेगी फिर खेती आदि का क्या हाल होगा। लाखों मरते रहते हैं, कोई बतलाते थोड़ेही हैं। तो बाप मुख्य बात समझाते हैं कि ऐसे अपने अन्दर जांच करो, मैं कितना बाप को याद करता हूँ। बाबा, आप तो बड़े मीठे हो, कमाल है आपकी। आपका फ़रमान है मुझे याद करो तो 21 जन्म के लिए कभी रोगी नहीं बनेंगे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो मैं गैरन्टी करता हूँ, सम्मुख बाप तुमको कहते हैं तुम फिर औरों को सुनाते हो। **बाप कहते हैं** मुझ बाप को याद करो, बहुत प्यार करो। तुमको कितना सहज रास्ता बताता हूँ - पतित से पावन होने का। कोई कहते हैं हम तो बहुत पाप आत्मा

हैं। अच्छा फिर ऐसे पाप नहीं करो, मुझे याद करते रहो तो जन्म-जन्मान्तर के जो पाप हैं, वह इस याद से भस्म होते जायेंगे। याद की ही मुख्य बात है। इनको कहा जाता है सहज याद, योग अक्षर भी निकाल दो। सन्यासियों के हठयोग तो किस्म-किस्म के हैं। अनेक प्रकार से सिखलाते हैं। इस बाबा ने गुरु तो बहुत किये हैं ना। अभी बेहद का **बाप कहते हैं** - इन सबको छोड़ो। इन सबका भी मुझे उद्धार करना है। और कोई की ताकत नहीं जो ऐसे कह सके। बाप ने ही कहा है - मैं इन साधुओं का भी उद्धार करता हूँ। फिर यह गुरु कैसे बन सकते। तो मूल एक बात बाप समझाते हैं - अपनी दिल से पूछो, हम कोई पाप तो नहीं करते हैं। किसको दुःख तो नहीं देते हैं? इसमें कोई तकलीफ नहीं है। अन्दर जांच करनी चाहिए, सारे दिन में कितना पाप किया? कितना याद किया? याद से ही पाप भस्म होंगे। कोशिश करनी चाहिए। यह बहुत मेहनत का काम है। ज्ञान देने वाला एक ही बाप है। बाप ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बतलाते हैं। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग।  
रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) बाप जो अविनाशी ज्ञान रत्नों का खज़ाना देते हैं उसका कदर करना है। बेपरवाह बन पाप कर्म नहीं करने हैं। अगर निश्चय है भगवान हमको पढ़ाते हैं तो अपार खुशी में रहना है।
- 2) ईश्वर के घर में कभी चोरी आदि करने का ख्याल न आये। यह आदत बहुत गंदी है। कहा जाता कख का चोर सो लख का चोर। अपने अन्दर से पूछना है - हम कितना पुण्य आत्मा बने हैं?

**वरदान:- निर्बल, दिलशिकस्त, असमर्थ आत्मा को एकस्ट्रा बल देने वाले  
रूहानी रहमदिल भव**

जो रूहानी रहमदिल बच्चे हैं - वह महादानी बन बिल्कुल होपलेस केस में होप पैदा कर देते हैं। निर्बल को बलवान बना देते हैं। दान सदा गरीब को, बेसहारे को दिया जाता है। तो जो निर्बल दिलशिकस्त, असमर्थ प्रजा क्वालिटी की आत्मायें हैं उनके प्रति रूहानी रहमदिल बन महादानी बनो। आपस में एक दूसरे के प्रति महादानी नहीं। वह तो सहयोगी साथी हो, भाई भाई हो, हमशरीक पुरुषार्थी हो, सहयोग दो, दान नहीं।

**स्लोगन:-** सदा एक बाप के श्रेष्ठ संग में रहो तो और किसी के संग का रंग प्रभाव नहीं डाल सकता।

**अव्यक्त इशारे - रूहानी रॉयल्टी और प्युरिटी की पर्सनैलिटी धारण करो**  
प्युरिटी के साथ-साथ चेहरे और चलन में रूहानियत की पर्सनैलिटी को धारण कर, इस ऊंची पर्सनैलिटी के रूहानी नशे में रहो। अपनी रूहानी पर्सनैलिटी को स्मृति में रख सदा प्रसन्नचित रहो तो सब प्रश्न समाप्त हो जायेंगे। अशान्त और परेशान आत्मायें आपकी प्रसन्नता की नज़र से प्रसन्न हो जायेंगी।